रचना अनुशीलन

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

"डॉ. बरसैया की समीक्षा दृष्टि में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की लोकमंगलकारी भावना आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का मानवतावादी नजरिया और आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी की सांस्कृतिक चेतना का समानुपातिक सामंजस्य हुआ है। समीक्षा की सही रचनात्मक पहल नकारवादी और धूमिल दृष्टि नहीं अपनाती, वह तटस्थता के साथ सकारवादी नजरिया अपनाती है। उनकी समीक्षा पद्धति सकारवादी नजरिया अपनाती है। उनकी समीक्षा पद्धति हिंदी जगत में इसीलिये स्वीकार्य है।"

–डॉ. संतोष कुमार तिवारी, सागर

"डॉ. बरसैंया के इस समीक्षा ग्रंथ को पढ़कर उनके व्यक्तित्व से अपरिचित भी कोई व्यक्ति यह सहज ही जान सकता है कि वे अच्छी कृतियों का चयन कर निरन्तर अध्ययनशील, सर्जनशील, सजग चौकन्ने और शब्द की सत्ता पर अबाध विश्वास करने वाले एक प्रतिष्ठित शिक्षक आचार्य हैं। उनकी दृष्टि शोधपरक और समय सापेक्ष है। ....डॉ. बरसैंया निबंधकार कवि और समीक्षक के साथ चिंतनपूर्ण वकृत्वकल्प के धनी है। वे अनेक समीक्षात्मक ग्रंथों के लेखक हैं।

–डॉ. सत्येंद्र शर्मा, सतना

डॉ. बरसैंया गंभीर विचारक और साहित्य चिंतक के साथ ही शोधपरक दृष्टि-सम्पन्न मनीषी के रूप में भी जाने जाते हैं। वे कुशल सम्पादक, पाठ-शोधक, काव्यमर्मी तो हैं ही, एक अच्छे अन्वेषक और तथ्यातथ्य निरूपक की परम्परा से भी जुड़े हैं। उन्होंने कई प्राचीन पांडुलिपियों का सम्पादन किया है और कई अज्ञात बुन्देलखंडी कवियों के प्रकाश में लाने का स्तुत्य प्रयास किया है। डॉ. बरसैंया के आलोचनात्मक निबंध उनके परम्परा अभुक्त दृष्टिकोण को सम्यक रूपेण उजागर करते हैं।.... उनकी समीक्षात्मक दृष्टि और चिंतना का उन्मेष नये साहित्य और नूतन धारणाओं के विश्लेषण-विवेचन में भी देखा जा सकता है।

–डॉ. किशोरी लाल, नैनी (इलाहाबाद)

ISBN : 81-8160-064-9

मूल्य : 400.00 रुपये

रचना-अनुशीलन

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

ISBN 81-8160-064-9

© डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया
प्रथम संस्करण : 2008

प्रकाशक :
सार्थक प्रकाशन
100ए, गौतम नगर,
नई दिल्ली–110 049
दूरभाष : 2656 7317

लेजर–टाइपसैटिंग :
मानक ग्राफिक्स
ओ–9 एक्स., वाणी विहार,
उत्तम नगर,
नई दिल्ली–110059

मुद्रक :
बालाजी आफसैट
एम–28, नवीन शाहदरा
दिल्ली–110 032

मूल्य : चार सौ रूपये

RACHNA ANUSHEELAN
by *Dr. Ganga Prasad Barasaiyan*

Price : Rs. 400.00

अपनी बात

मनुष्य जिस समाज और परिवेश में जीता है उससे अप्रभावित नहीं रह सकता। संवेदना–सम्पन्न व्यक्ति प्रतिक्रियाहीन भी नहीं हो सकता। यह प्रतिक्रिया ही साहित्य–सर्जना के क्षेत्र में अभिव्यक्ति–व्यंजना कहलाती है। अनुभूति सभी की एक सी नहीं हो सकती। अनुभूतियों का संसार संस्कारों से जुड़ा होता है। संस्कार पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि प्रभावों से आकार पाते हैं। इन सबका मिला जुला संस्कार–भाव व्यक्ति की आंतरिक दुनिया में रचपच कर साहित्यकार की लेखनी से शब्दाकार पाते हैं।

जिस प्रकार रचनाकार अपनी मनोदशाओं के आधार पर संवेदनात्मक अनुभूतियों की विविधवर्णी अभिव्यक्ति अपनी–अपनी भाषा–शैली में करते हैं उसी प्रकार पाठक की भी अपनी समझ, दृष्टि और रूचि होती है। इसीलिए पाठकों–समीक्षकों की भी अलग–अलग प्रतिक्रियायें होती हैं। समीक्षक भी अपनी–अपनी दृष्टि से कृतियों का मूल्यांकन करते हैं। आलोचना के भिन्न–भिन्न सिद्धान्त इन्हीं की उपज हैं। सभी के आस्वाद के धरातल अपने होते हैं। यही बात इस ग्रंथ में संग्रहित समीक्षाओं के बारे में भी कही जा सकती है।

संग्रह के आलेख समय–समय पर मेरे पढ़ने में आईं कृतियों का समीक्षात्मक अनुशीलन मात्र हैं। किसी विशेष सिद्धान्त, आग्रह या शास्त्र की कसौटी पर रखकर मैंने इन्हें नहीं देखा, न परखा। पढ़ने के बाद मन में जो प्रतिक्रिया हुई उसके आधार पर कृतियों का गुण–दोष परक आकलन–अनुशीलन किया गया है। प्रयास यही रहा है कि कृति का मूल पक्ष उजागर हो और कृतिकार के सृजन–वैशिष्ट्य को भी उद्घाटित–रेखांकित किया जा सके। यहाँ आयु, वर्ग या क्षेत्र का कोई विचार नहीं किया गया। पद्य और गद्य कृतियों संबंधी आलेखें को केवल विधावार रख दिया गया है। इनमें पौराणिक प्रबंधकाव्यों से लेकर नवीनतम काव्यकृतियों के साथ उपन्यास, निबंध, संस्मरण, समीक्षात्मक ग्रंथ तथा कुछ प्राचीन कृतियाँ भी शामिल हैं। इस प्रकार हिन्दी साहित्य–यात्रा की एक झलक इनके माध्यम से मिल जाती है। संग्रह के अधिकांश आलेख देश की

साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहा है। संग्रह में संकलित बुन्देली और छत्तीसगढ़ी के रचनाकारों की कृतियाँ यह बोध कराने में पूर्ण सक्षम हैं। आंचलिक ग्रामीण रचनाकारों को मान–सम्मान और प्रचार–प्रसार का अवसर भले न मिले, पर वे अपनी गाँठ का पैसा लगाकर अरण्य ऋषियों की तरह साहित्य–साधना में जुटे रहते हैं। आँचलिक भाषाओं की यहाँ दी गई कृतियाँ उन भाषाओं की बानगी मात्र हैं, उनकी प्रतिनिधि रचनायें चाहे भले न हों। इन्हें देखकर लगता है कि जो दिल्ली, इलाहाबाद, बनारस आदि में लिखा जा रहा है, वही सागर, छतरपुर, टीकमगढ़, बिलासपुर, रायपुर के गाँवों में भी लिखा जा रहा है। अन्तर यह है कि शहरी कृतिकारों की सजावटवाली कृतियों का विमोचन महामहिमों के द्वारा ताम–झाम के साथ होता है, चर्चा की जाती है तो ग्रामीण कृतियों के जन्मोत्सव पर कोई मंगलगीत गानेवाला भी नहीं होता। फिर भी अयोध्या के राजा राम की तुलना में वाल्मीकि आश्रम के ये लव–कुश प्रतिभा में कम नहीं होते।

आजकल हिन्दी गज़लों की बड़ी चर्चा है। बड़ी संख्या में गजलें छपकर आ रही हैं। हिन्दी में दोहों का युग भी लौटता दिखाई दे रहा है। इस संकलन में दो गजल संग्रहों की भी समीक्षा दी गई है। प्रेमशंकर रघुवंशी की काव्य–कृति 'देखो–साँप तक्षक–नाग' लीक से हटकर मदारी की बोली–शैली में है। उस पर मेरी जो तात्कालिक काव्यात्मक समीक्षात्मक प्रतिक्रिया हुई, उसे भी इसमें दिया गया है जो कृति की प्रभावोत्पादकता की द्योतक है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'कहीं ईसुरी फाग' को पढ़कर कुछ प्रश्न मन में उठे थे। उनके समाधान के लिए मैंने मैत्रेयी जी को पत्र लिखा था, पर वह पत्र डाक से वापस आ गया। फिर मैंने उसी पत्र को खुले पत्र के रूप में छापने के लिए कतिपय पत्र–पत्रिकाओं के सम्पादकों के पास भेजा किन्तु किसी नहीं छापा। वे प्रश्न आज भी अनुत्तरित हैं। उस उपन्यास की समीक्षा के साथ मैंने उस पत्र को भी इस आशा के साथ शामिल कर दिया है कि शायद कभी उन प्रश्नों के समाधानकारक उत्तर मिल सकें।

कहने का तात्पर्य यह कि इस संग्रह में हिन्दी के व्यापक राष्ट्रीय परिक्षेत्र के साहित्य की विविध विधाओं की लम्बी कालावधि से लेकर नवीनतम कृतियों तक से संबंधित समीक्षाओं को सम्मिलित कर साहित्य के समग्र का आस्वादन कराने की चेष्टा की गई है। आकलन–अनुशीलन में पूरी तटस्थता बरती गई है। दृष्टिकोंण सकारात्मक रखा गया है। 'ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर'। इसी भावना के साथ मैं साहित्य–जगत को पूर्व में अपने समीक्षात्मक आलेखों के दो संग्रह 'चिन्तन–अनुचिन्तन' तथा 'रचना से रचना तक' सौंप चुका हूँ। विद्वानों ने

उनकी सराहना कर मुझे प्रेरित किया है। उसी प्रेरणा के फलस्वरूप समीक्षात्मक आलेखों का यह तीसरा संग्रह 'रचना–अनुशीलन' भी साहित्य–जगत को सादर समर्पित करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। विश्वास है कि विद्वत् समाज इसे भी स्वीकार करेगा।

– डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया
१२–एम.आई.जी, चौबे कालोनी,
छतरपुर (म. प्र.) – ४७१००१
फोन : ०७६८२–२४१०२४
मो. ०९४२५३७६४१३

विभिन्न प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। उन सम्पादकों के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

संग्रह के संबंध में एक उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इसमें आंचलिक भाषा की कृतियों को भी सम्मिलित किया गया है। 'मैं तो ऊँसई अतर में भींजी' महेन्द्र फुसकेले की ऐसी औपन्यासिक कृति है जिसमें बुन्देली का पूरा प्रभाव है। इसके माध्यम से धर्म–साधना के क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों को बड़ी साहसिकता से अनावृत किया गया है। डॉ. रामनारायण शर्मा का प्रबंधकाव्य 'ईसुरी' बुन्देली भाषा (बोली) की कृति है। बुन्देली के लोककवि ईसुरी के जीवन–वृत्त को इसमें समेटा गया है। मैत्रेयी पुष्पा का चर्चित उपन्यास 'कहीं ईसुरी फाग' भी ईसुरी के जीवन से संबंधित है। डॉ. श्यामसुन्दर दुबे की रचना 'धरती के अनन्त चक्करों में' तथा द्वारिकेश मिश्र का 'रानी लक्ष्मीबाई चरित' भी बुन्देली संस्कृति का आस्वादन कराती है। इनके अतिरिक्त शंकर दयाल खरे की बुन्देली कवितायें व गोपालदास रुसिया की चौकड़ियाँ बुन्देली के स्वरूप का भरपूर परिचय देती हैं। इसीप्रकार 'पर्रा भर लाई', 'रहँचुली' और 'बिन भाँडी के अँगना' छत्तीसगढ़ी बोली के काव्य संकलन हैं। नारायण लाल परमार और हरिठाकुर भी छत्तीसगढ़ के सशक्त कवि हैं। उन दोनों के काव्य संकलन क्रमशः 'खोखले शब्दों के खिलाफ' तथा 'गीतों के शिलालेख' इसमें शामिल हैं। अब तो छत्तीसगढ़ की सरकार ने छत्तीसगढ़ी को अपनी राजभाषा घोषित कर दिया है।

हिन्दी के समीक्षा–ग्रंथों में क्षेत्रीय या आंचलिक भाषा की कृतियाँ प्रायः बहुत कम मिलती हैं। वैसे भी महानगरीय शहरी विद्वान समीक्षक गाँवों, ग्रामीणों, ग्रामीण बोलियों तथा ग्रामीण कृतियों को अक्सर हेय दृष्टि से देखते हैं। उन्हें यह भ्रम रहता है कि सारी बौद्धिकता की समझ और संवेदनात्मक क्षमता का ठेका शहरी लोगों के पास है। इसी भ्रमात्मक दृष्टि ने सारे देश की व्यवस्था का कबाड़ा कर रखा है और यही दुखद स्थिति साहित्य के क्षेत्र में भी देखने नें आ रही है। मैं पूरे विश्वास के साथ दावा करता हूँ कि ग्रामीण प्रतिभायें देश की किसी भी शहरी प्रतिभा से कम नहीं हैं। उनका बौद्धिक चिन्तन, संवेदनात्मक भाव और सांस्कृतिक मानवीय मंगलभावी दृष्टि ऊँची और निष्कलुष है। क्षेत्रीय भाषा की इन रचनाओं को पढ़कर अनुभव होता है कि भाव–भाषा– शैली और कलात्मकता में वे हिन्दी की श्रेष्ठ रचनाओं को टक्कर देने में सक्षम हैं। हिन्दी का तथाकथित शहरी साहित्यकार जो सोचता और लिखता है, दूरस्थ ग्रामीण अंचल के आंचलिक रचनाकार का भी वही संवेदनात्मक चिन्तन है। वह देश, समाज, और समय के

अनुक्रमणिका

			पृ. सं..
१.	सीता सत्यम्	– भैयालाल व्यास	११
२.	विप्रवीर परशुराम	– रमाशंकर मिश्र	१८
३.	कर्णजयी	– डॉ. रामविशाल चंसौरिया	२४
४.	अरुन्धती महाकाव्य	– जगद्‌गुरु रामभद्राचार्य जी	३२
५.	राम गुन गाऊँ	– पंडित रामकिंकर उपाध्याय	३८
६.	कुछ बोलो राम	– श्रीनिवास शुक्ल	४३
७.	वह नदी बीमार है	– रामअधीर	४७
८.	चिरन्तन	– केशरीनारायण त्रिपाठी	५३
९.	हम जो नदियों का संगम हैं	– बोधिसत्व	५८
१०.	वे सोये तो नहीं होंगे	– नंद चतुर्वेदी	६१
११.	जीवन के रंग	– जवाहर लाल तरुण	६७
१२.	अधम चाकरी	– सत्यनारायण गोबरेले	७४
१३.	सोना आँख नदिया	– राज बहादुर सिंह	७८
१४.	दहक उठा गुलमोहर	– शोभनाथ यादव	८५
१५.	प्रत्यूष की भटकी किरण यायावरी	– रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	९०
१६.	रूपगंधा	– डॉ. राम गोपाल शर्मा 'दिनेश'	९६
१७.	घुटन	– आचार्य भगवत दुबे	१०२
१८.	सपने हिरन हो गये	– डॉ. बी.पी. दुबे	१०८
१९.	रानी लक्ष्मी बाई चरित	– पं. द्वारिकेश मिश्र	१११
२०.	ईसुरी	– डॉ. राम नारायण शर्मा	११६
२१.	धरती के अनन्त चक्करो में	– डॉ. श्याम सुन्दर दुबे	१२२
२२.	बाँकी बनी बुन्देली बानी	– शंकर दयाल खरे	१२५
२३.	नीचट बोल बुन्देली के	– गोपाल दास रूसिया	१३०
२४.	बिहारी–विनोद	– कवि बिहारी भट्ट	१३२
२५.	खोखले शब्दों के खिलाफ	– नारायण लाल परमार	१३६
२६.	गीतों के शिलालेख	– हरि ठाकुर	१४५

२७.	पर्रा भर लाई	— श्यामलाल चतुर्वेदी	१५२
२८	रँहचुली	— भगतसिंह सोनी	१५७
२६	बिन भाँडी के अंगना	— प्रभंजन शास्त्री	१६०
३०.	देखो साँप—तक्षक नाग	— प्रेम शंकर रघुवंशी	१६५
३१.	मैं तो ऊँसई अतर में भींजी	— महेन्द्र फुसकेले	१६६
३२.	कही ईसुरी फाग	— मैत्रेयी पुष्पा	१७२
३३.	विश्रामपुर का संत	— श्रीलाल शुक्ल	१७७
३४.	सूरज के आने तक	— डॉ. भगवतीशरण मिश्र	१८१
३५.	अमरकान्त का कथा साहित्य	— डॉ. बहादुरसिंह परमार	१८५
३६.	भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य : संवेदना और शिल्प	— डॉ. संतोष कुमार तिवारी	१८६
३७.	समीक्षा की रचनात्मक पहचान	— डॉ. संतोष कुमार तिवारी	२०१
३८.	हिमालय से ऊचे : सागर से गहरे	— दशरथ जैन	२०५
३६.	सदा सुहागन रूठ गई	— सुधाकर पांडेय	२०६
४०.	प्रभास की सीपियाँ	— नर्मदा प्रसाद उपाध्याय	२१७
४१.	गाँव की कलम	— डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र	२२०
४२.	पर साथ—साथ चल रही याद	— डॉ. विष्णुकान्त शास्त्री	२२६
४३.	प्रतापसाहि और उनकी व्यंगार्थ कौमुदी	— डॉ. आत्माराम शर्मा	२३५
४४.	प्रतापसाहि की अप्रकाशित कृति महावीर को नख—शिख		२४४
४५.	करण भट्ट उनका रस कल्लोल		२५८
४६.	सत्य की कुंजी खुलासा	— महामति प्राणनाथ	२६६

डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया''

जन्म : 6 फरवरी 1937

शिक्षा : एम.ए., पी-एच.डी.

सेवा : म.प्र. के शासकीय महाविद्यालयों में व्याख्याता, प्राध्यापक, प्राचार्य, स्नातकोत्तर प्राचार्य पद से 31-12-96 को सेवानिवृत्त।

निवास : एम.आई.जी.-12, चौबे कॉलोनी, छतरपुर (म.प्र.)। फोन : 07682-241024

पुस्तकें : (1) हिन्दी साहित्य में निबन्ध और निबन्धकार (शोध प्रबन्ध) (2) हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार (3) छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार (4) आधुनिक काव्य : संदर्भ और प्रकृति, (5) रस विलास, (6) वीर विलास, (7) सुदामा चरित, (8) चिन्तन-अनुचिन्तन, (9) बुन्देलखण्ड के अज्ञात रचनाकार (शोधग्रंथ) (10) अरमान वर पाने का (व्यंग्य), (13) तुलसी के तेवर, (14) कर्म और आराधना, (15) रचना से रचना तक, (16) सृजन-विमर्श, (17) समवाय, (18) नारी : एक अध्ययन (19) मेरी जन्मभूमि : मेरा गाँव, (20) कभी-कभी यह भी (काव्य संग्रह), (21) निन्दक नियरे राखिये, (22) अथ काटना कुत्ते का भइया जी को, (23) शब्दों के रंग : बदलते प्रसंग, (24) लोक वाटिका, (25) रूपक और साक्षात्कार आदि।

सम्मान-पुरस्कार : (1) महामहिम उप राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल जी शर्मा द्वारा साहित्य श्री। (2) अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन द्वारा "साहित्य श्री" तथा भारत भाषा भूषण से सम्मानित (3) नागरी प्रचारणी सभा, कानपुर द्वारा–'साहित्य भारती', (4) तुलसी सम्मान व विद्रोही पुरस्कार, (5) ओरछा महोत्सव व केशव जयंती समारोह समिति द्वारा "मित्र मिश्र अलंकरण" एवं पुरस्कार (6) लोक मंगल एवं लोक संस्कृति सेवा निधि ट्रस्ट उरई (उ.प्र.) द्वारा 'गौरी शंकर द्विवेदी शंकर' अलंकरण एवं पुरस्कार, (7) अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

संस्थाओं से सम्बद्ध : (1) अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा के कला संकाय के पूर्व डीन, हिन्दी बोर्ड के अध्यक्ष व कार्य परिषद के सदस्य (2) पूर्व डायरेक्टर, महाकवि केशव अनुसन्धान केन्द्र, ओरछा, म.प्र. (3) म.प्र. आंचलिक साहित्यकार परिषद के उपाध्यक्ष (4) बुन्देलखण्ड कला संस्कृति परिषद, छतरपुर के अध्यक्ष (5) अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन, छतरपुर के अध्यक्ष आदि।

सार्थक प्रकाशन
100 ए, गौतमनगर, नई दिल्ली-110 049

ISBN 81-8160-064-9
9788181600646

Price: Rs. 400/-